अतिरिक्त भाग

आज आराधना में की जाने वाली बातों का अधिकार

हम जान सकते हैं कि आराधना में क्या स्वीकार्य है क्योंकि परमेश्वर ने प्रकट कर दिया है कि हमें क्या करना चाहिए। बाइबली नियम पर आधारित चार प्रश्नों से यह समझने में सहायता मिलेगी कि हम कैसे जान सकते हैं कि आराधना में की जाने वाली कोई बात सही है या गलत।

1. *क्या यीशु ने इसकी आज्ञा दी?* उसे दिए गए अधिकार के आधार पर यीशु ने प्रेरितों को उसके चेलों को वे ''सब बातें मानना'' सिखाने के लिए कहा जिनकी उसने आज्ञा दी थी (मत्ती 28:18, 20)। यीशु की आज्ञाएं वैकल्पिक नहीं हैं हमें उसकी सब आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। यदि हम कम आज्ञाओं को मानते हैं तो हम उससे जिसकी यीशु ने आज्ञा दी है, निकालते हैं; यदि हम अधिक करते हैं तो हम वह कर रहे होते हैं जो यीशु की ओर से नहीं बल्कि मनुष्य की ओर से है। ''सब सत्य'' यानी यीशु की सारी शिक्षा प्रकट की जा चुकी है (यूहन्ना 14:26; 16:13)। जो लोग इस सच्चाई में जोड़ते हैं वे इस तथ्य से इनकार कर रहे हैं कि *सब* प्रकट हो चुका है।

प्रेरितों और प्राचीनों यानी ऐल्डरों ने अन्यजातियों के पास एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था कि खतने और मूसा की आज्ञा को मानने की उन्होंने ''आज्ञा नहीं दी थी'' (प्रेरितों 15:24)। अन्यजाति मसीहियों को कुछ बातें मानने की कभी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उन्हें मानने की कोई आज्ञा नहीं मिली थी। परमेश्वर ने नादाब और अबीहू को मार डाला था क्योंकि उन्होंने वह किया ''जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी'' (लैव्यव्यवस्था 10:1ख)। पुराने नियम में लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार हमारे लिए उदाहरण हैं (1 कुरिन्थियों 10:11; रोमियों 15:4)।

2. *क्या यीशु ने इसकी मनाही की है?* यदि हम कुछ ऐसा करते हैं, जिसकी यीशु ने मनाही की हो या उसे गलत कहा हो तो हम उसके अधिकार का उल्लंघन करते हैं। उदाहरण के लिए प्रेरितों 15:29 में दी गई ताड़ना के लिए विचार करें। परन्तु यीशु ने साफ़ तौर पर हर उस बात से मना नहीं किया है, जो हमें नहीं करनी चाहिए।

3. *क्या यीशु ने चुनने की छूट दी है?* यदि किसी क्षेत्र में यीशु ने चुनने की छूट दी है तो हम उस क्षेत्र में उसकी पसन्द तक सीमित हैं। उसकी पसन्द आधिकारिक और सीमित है। यदि यह न होता तो उसकी पसन्द किसी काम की नहीं होती? हमारी पसन्द उसकी पसन्द की तरह ही स्वीकार्य होती। किसी बात को करने के बारे में ''न करना'' की आज्ञा की आवश्यकता नहीं होगी जहां उसने यह कहा हो कि क्या करना है। यह तथ्य कि पसन्द बताई गई है किसी भी और बात को निकाल देता है? वरना यीशु को अपनी पसन्द बताने की आवश्यकता नहीं थी। हमें उसकी पसन्द का सम्मान करते हुए उसमें जोड़ना नहीं चाहिए।

4. *क्या यीशु ने पसन्द नहीं बताई है ?* यदि किसी क्षेत्र में उसने पसन्द न बताई होती तो हमें अपनी प्राथमिकता को मानने और अपनी मर्जी से करने की छूट है।

इन नियमों को प्रभु भोज पर लागू करके समझा जा सकता है: (1) यीशु ने क्या आज्ञा दी है ? उसने रोटी और दाख कर रस इस्तेमाल करने की आज्ञा दी है (मत्ती 26:26-28; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। (2) क्या यीशु ने कोई पाबंदियां लगाई हैं ? प्रभु भोज के सम्बन्ध में यीशु ने कोई पाबंदी नहीं बताई, पर यह हमें अपनी इच्छा से प्रभु भोज में कुछ भी मिलाने की छूट नहीं देता। (3) क्या यीशु ने पसन्द बनाई ? उसने रोटी और दाख के रस को चुना (मत्ती 26:26-28)। हम उसकी पसन्द से बंधे हैं। यदि हम किसी और प्रकार का भोजन और पेय इस्तेमाल करते हैं, जैसे दूध और आलू तो हम यीशु के अधिकार के बिना अपने अधिकार से काम कर रहे होंगे। (4) क्या ऐसे क्षेत्र हैं, जहां यीशु ने कोई पसन्द नहीं बताई ? उसने यह नहीं बताया कि दाख के रस के लिए कौन सा बर्तन होना चाहिए यानी यह शीशे का, लकड़ी का, धातु का, कागज़ का, मिट्टी का होना चाहिए या नहीं। यह तथ्य कि इस मामले में उसने कोई पसन्द नहीं बताई हमें जो भी अच्छा लगे वही बर्तन चुनने की छूट देता है। यदि यीशु ने लकड़ी का बर्तन बताया होता तो किसी और तरह का बर्तन इस्तेमाल करना उसके अधिकार का उल्लंघन होता।

यदि यीशु ने पसन्द बताई है तो यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि क्या किया जाना चाहिए। उसकी पसन्द एकमात्र अधिकार है और हम उसकी पसन्द से बंधे हैं। इस नियम को हम हर रोज़ मानते हैं। उदाहरण के लिए किसी रेस्तरां के मीनू से ऑर्डर करते समय हम बताते हैं कि हमें क्या-क्या चाहिए। जिस खाने का हमने ऑर्डर किया है वेटर को वही खाना लाने की अनुमति है यानी वह दूसरा खाना नहीं ला सकता। यदि यह नियम लागू नहीं होता तो हमें यह कहना पड़ता कि हमें मीनू में से क्या-क्या नहीं चाहिए ताकि जिन चीज़ों का हमने ऑर्डर नहीं किया कहीं वेटर वे चीज़ें न ले आए। ऐसा होने पर जो-जो हमने नहीं बताया कि हमें नहीं चाहिए वह ले आने पर हमें उसे लेना पड़ता। यदि हम प्लेटों, चमचों या अन्य बर्तनों की कोई पसन्द नहीं बताते तो रेस्तरां को अपनी पसन्द का बर्तन चुनने की छूट है। ऑर्डर देने के बाद खाना बांटने वालों को उसमें जोड़ने, उसमें से निकालने या ऑर्डर बदलने का कोई अधिकार नहीं है।

अनाधिकृत रीतियों का क्या होगा?

कई बातें मसीही लोगों के लिए अनाधिकृत हैं। आराधना के रूप में नाचना यीशु की ओर से नहीं है। मरियम और स्त्रियां व्यवस्था दिए जाने से पहले नाची थीं (निर्गमन 15:20)। दाऊद नाचा था (2 शमुएल 6:14-16) और भजन संहिता 149:3 और 150:4 में उसने नाचने का उल्लेख किया। परन्तु नये नियम में परमेश्वर की आराधना में किसी मण्डली या व्यक्ति के नाचने का बाइबल से उदाहरण नहीं दिया जा सकता।

बाइबल में कई जगह जहां नाचने का उल्लेख है वह धार्मिक अर्थ में नहीं होगा (न्यायियों 11:34; 1 शमुएल 18:6; मत्ती 11:17; 14:6; लूका 15:25)। अन्य मामलों में यह मूर्तिपूजक उपासना में होता था (निर्गमन 32:19; शायद न्यायियों 21:21-23 भी; 1 शमुएल 30:16)। नया नियम न तो इस बात की आज्ञा देता है और न संकेत देता है कि नाचना मसीही लोगों के लिए आराधना का एक रूप होना चाहिए। जो लोग आराधना में नाचते हैं ऐसा वे यीशु, उसके प्रेरितों या उसके भविष्यवक्ताओं की शिक्षा पर आधारित होकर नहीं कर सकता।

आराधना मन से होती है न कि शरीर से। यीशु ने आराधक का ध्यान खींचने वाले आकर्षण दिखाने वाले बाहरी प्रदर्शन को नकारा। उसने सिखाया कि हमें ''मनुष्य को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम'' (मत्ती 6:1, 2) नहीं करने चाहिए। हमें भौतिक प्रदर्शन नहीं करना चाहिए जिससे दूसरों को यह संकेत मिले कि हम प्रार्थना कर रहे या उपवास रख रहे हैं (मत्ती 6:5, 6, 16-18)। हमारी उपासनाएं बिना बाहरी दिखावे या आराधकों के रूप में लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनने वाली नहीं होनी चाहिए।

आराधना में होने वाली बातों की परख करते हुए एक और विचार है कि हमारी आराधना प्रतिनिधिक नहीं हो सकती। हर मसीही की जिम्मेदारी है कि वह व्यक्तिगत रूप से आराधना में प्रवेश करे। दूसरों के मुंह से आराधना सुनना आराधना करने जैसा नहीं है। हमें देखने वाले नहीं बल्कि भाग लेने वाले होना चाहिए। जिसमें परमेश्वर हमें देखने और सुनने वाला हो। सभा में अकेले या क्वायर के रूप में गाना गाने वालों की कला को दिखा सकता है और वे सुनने वालों का मनोरंजन कर सकते हैं। परन्तु नये नियम में अकेले या क्वायर के गाने का उदाहरण या आज्ञा नहीं मिलती। बेशक यदि परमेश्वर मसीही लोगों से बैठकर दूसरों से आराधना सुनवाना चाहता तो वह इसकी आज्ञा या कोई उदाहरण दे सकता था।

कई लोग यह साबित करने के लिए कि कुरिन्थुस में सोलो यानी अकेले गीत गाए जाते थे। 1 कुरिन्थियों 14:26 में पौलुस की बात ''जब तुम इकट्ठे होते हो तो हर एक के हृदय में भजन रहता है'' पर निर्भर है। पौलुस सम्भवतया उसके लिए जो वे कर रहे थे उनकी सराहना नहीं बल्कि

उनकी ताड़ना कर रहा था। यदि वह उनकी ताड़ना नहीं भी कर रहा था तो भी यह बात यह साबित नहीं करती कि उनमें एकल गीत गाये जाते थे। इससे पौलुस के कहने का अर्थ यह हो सकता है कि हर व्यक्ति मण्डली द्वारा गाये जाने वाले भजन का सुझाव दे रहा था या उसका आरम्भ कर रहा था। एक ही समय में एक ही भजन कई सदस्यों द्वारा आरम्भ करने सुधारने के बजाय गड़बड़ होनी थी, वह भजन चाहे मिलकर गाया जाता या उद्धृत किया जाता या उसे पढ़ा जाता।

दाऊद की बात ''सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा'' (इब्रानियों 2:12; भजन संहिता 22:22 से लिया गया) जैसा कि कइयों का दावा होता है, सोलो गाने का संकेत नहीं देता। उसने कहा कि वह ''सभा के *बीच में* '' गायेगा। मण्डली में गाने वाला हर व्यक्ति मण्डली के बीच में गा रहा होता है। यह आयत सोलो या गायक मण्डली के गाने के बजाय मण्डली के रूप में गाने का सुझाव देती है।

पवित्र आत्मा के विषय में यीशु ने प्रेरितों को आश्वस्त किया, ''वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा'' (यूहन्ना 14:26) और ''तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)। आराधना में की जाने वाली बातें जो यीशु और प्रेरितों की शिक्षा में नहीं हैं इस बात का इनकार है कि प्रेरितों को जो जानना आवश्यक था वह सब सत्य बता दिया गया था। प्रेरितों पर प्रकट किया गया सम्पूर्ण सत्य उनके लेखों में मिलता है (1 कुरिन्थियों 14:37; 1 यूहन्ना 4:6)।

आराधना में स्त्रियां

मूर्तिपूजक संसार में मसीहियत के फलने पर, नये मसीही लोगों को मूर्तिपूजक परम्पराओं पर चलने से बचाना आवश्यक था। परमेश्वर की आराधना करने वालों के लिए समाज के रीति रिवाजों से बचना आरम्भ से कठिन रहा है। मसीही स्त्रियों को जिस संस्कृति में वे रहती थीं, उसके अनुसार चलना बताने के बजाय पौलुस ने ऐसे निर्देश दिए गए जो संस्कृति के विपरीत थे। उसने लिखा कि स्त्रियां मसीही सभाओं में चुप रहें और मसीही समाज में उन्हें अगुओं के रूप में सेवा करने की अनुमति नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:34, 35; 1 तीमुथियुस 2:13, 14)। उसने संस्कृति के आधार पर नही, बल्कि यीशु की आज्ञाओं के आधार पर कहा (1 कुरिन्थियों 14:37)। स्त्रियों को अपने अपने पतियों के अधीन रहते हुए, अधीन रहना था (इफिसियों 5:23, 24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6)।

नया नियम लिखे जाने के समय मूर्तिपूजक संसार में स्त्रियां प्रमुख स्थान पा रही थीं, वे अपने समाजों में और मूर्तियों की पूजा कराने में अगुओं का काम करती थीं।

> यह संकेत देने के आंशिक प्रमाण मिलते हैं कि स्त्रियों के पास ... सरकारी पद होते थे और उनसे पुरुषों की तरह ही जन सेवाएं करने की अपेक्षा की जाती थी। स्त्रियों के नाम कई आधिकारिक शिलालेखों में उन्हें सम्मान देते हुए उनकी जन सेवा और उदारता की बातें दर्ज हैं। वे मन्दिरों का रख रखाव करतीं और खेलों, जुलूसों और बलिदानों को प्रायोजित करती थीं।[1]

वेलरी अब्राहमसेन की टिप्पणियां इससे सहमत हैं:

> डायना, आइसिस, लीविया, डायोनिसस तथा लिब्रा व लिब्रा सहित अधिकतर मूर्तिपूजक समुदायों में स्त्रियां पुजारियों तथा अन्य अगुओं के रूप में में सेवा करती थीं। वे उपासना पद्धतियों में सक्रिय योगदान देतीं: भजन व संस्कार बनातीं, मन्दिर तथा समुदाय के वित्त का प्रबन्ध करतीं, पर्व के दिन मनाने का प्रबन्ध करतीं, गाती बजातीं और नेतृत्व के निर्णय लेतीं, जो लोगों की बहुसंख्या को प्रभावित करते।[2]

अन्य पुस्तकों में इसकी और गवाही मिलती है। विलियम बेयर्ड ने लिखा है:

> ... यूनानी संस्कृति का युग सामान्यता स्त्रियों की स्वतंत्रता का समय था। ... परन्तु विरोध के बावजूद पौलुस के समय की स्त्रियों को इधर-उधर जाने, विवाह एवं तलाक के अधिकारों, और कुछ स्थानों और कुछ समुदायों में सार्वजनिक और धार्मिक पद रखने की काफी स्वतंत्रता थी। ... यूनानी स्त्रियों ने पर्दे का त्याग कर दिया था और वे केश सज्जा हूं (लैव्यव्यवस्था 18:3, 4)।

की असंख्य शैलियों का इस्तेमाल कर रही थीं।[3]

प्रेरितों के काम की पुस्तक भी इस तथ्य की पुष्टि करती है कि मूर्तिपूजक संस्कृति में स्त्रियों के पास महत्वपूर्ण पद होते थे। आतंकिया के पिसिदया में पौलुस और बरनबास के सताव में प्रमुख भमिका निभाई थी: ''परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उसकाया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपने सिवानों से निकाल दिया'' (प्रेरितों 13:50)। प्रेरितों 17:4 में थिस्सलुनीकियों की ''कुलीन स्त्रियों'' का उल्लेख है।

अपने लोगों के लिए परमेश्वर के मानक ने हमेशा उन्हें समाज से अलग किया है। उसने इस्राएलियों को बताया:

> तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी जहां मैं तुम्हें ले चलता हूं न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना। मेरे ही नियमों को मानना, और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं (लैव्यव्यवस्था 18:3, 4)।

उसने मसीही लोगों को निर्देश दिया:

> और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों 12:2)।

समाज चाहे स्त्रियों को वे भूमिकाएं दे दें, जिनकी अनुमति वचन में नहीं दी गई है, परन्तु मसीही स्त्रियों को संसार के प्रभाव में चलने की अनुमति नहीं है। उनका लक्ष्य यीशु की आज्ञाओं का पालन करना होना चाहिए, तब भी जब उसकी आज्ञाएं सांस्कृतिक व्यवहारों से मेल न खाती हों। स्त्रियों को यह नहीं पूछना चाहिए कि ''समाज क्या कर रहा है?'' बल्कि यह पूछना चाहिए कि ''यीशु क्या चाहता है?''

टिप्पणियां

[1]रॉस शैपर्ड क्रेमट एण्ड मेरी रोज़ डी'एंजलो *विमेन एण्ड क्रिश्चियन ओरिजिंस* (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999), 86. [2]वेलरी अब्राहमसेन, *विमेन एण्ड वरशिप एट फिलिपाय: डायना/अरतिमस एण्ड अदर कल्ट्स इ द अरली क्रिश्चियन इरा* (पोर्टलैंड, माइने: आसर्टे शैल प्रेस, 1995), 1994. [3]विलियम बेयर्ड, *दि कोरिंथियन चर्च-ए बिब्लिकल अप्रोच टू अर्बन कल्चर* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1964), 121-22.

क्या इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 में सामूहिक आराधना के लिए गाने की आज्ञा दी गई है?

क्या सामूहिक आराधना के लिए गाने की आज्ञा है? यदि पवित्र लोगों की सभाओं में गाने के लिए कोई निर्देश नहीं दिया गया है, तो इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। यदि परमेश्वर संगीत की आज्ञा देता तो यह न बताता कि कैसा संगीत, तो हमें आराधना में अपनी पसन्द का किसी भी किस्म का संगीत शामिल करने में छूट होती।

कई लोगों का दावा है कि इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 की सैटिंग सामूहिक आराधना नहीं है। यदि यह सैटिंग मसीही लोगों के इकट्ठ की नहीं है, तो ''एक दूसरे से बातें करने और एक दूसरे के सिखाने और समझाने'' की आज्ञाएं कैसे पूरी हो सकती हैं? यदि दूसरे लोग वहां नहीं हों तो आप उनके साथ बात कैसे कर सकते हैं, उन्हें सिखा कैसे सकते हैं और उन्हें सुधार कैसे सकते हैं? एफ़. एफ़ ब्रूस ने अवलोकन किया है:

> पौलुस का यह कहने का कि ''मसीह के वचन को अधिकाई से बसने दो'' क्या अर्थ है? क्या ''बसने दो'' का अर्थ ''अपने अन्दर'' है (निजी मसीहियों के रूप में) या ''तुम्हारे बीच'' है (जैसे मसीही समुदाय में)? शायद वह किसी भी विकल्प को इतनी मज़बूती से न लिखता, चाहे दोनें में से एक स्वीकार किया जाना था, तो भी संदर्भ को ध्यान रखते हुए, सामूहिक अर्थ में लेने को प्राथमिकत दी जा सकती है। मसीही संदेश के प्रचार और उनकी सभाओं में मसीही शिक्षा का दिया जाना होना आवश्यक है।[1]

एडवर्ड लोस ने भी माना कि यह आयतें मसीही समाज में लागू होती हैं। ''समाज के लोग'' उन गीतों में जो यह सिखाते हैं वचन के प्रचार व्याख्या का उत्तर देते हैं।[2] एक दूसरे को सिखाने और समझाने के लिए पौलुस के निर्देश मसीही लोगों की सभा के लिए दिया गया होगा। इस आदेश का पालन करने के लिए एक से अधिक लोगों का उपस्थित होना आवश्यक था। आराधना के लिए मसीही लोगों के इकट्ठा होने में गाना शामिल होना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]एफ. एफ. ब्रूस, द *एपिस्टल ऑफ पॉल टू द इफिसियंस एड टू द कुलुसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 283. [2]एडवर्ड लोहेस, *कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* अनु. विलियम आर. फिलेमन एंड रॉबर्ट जे. क्रैरिस (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1971), 151.

क्या जो भी हम करें वह सब आराधना है?

क्या हम जो कुछ भी करते हैं वह आराधना होता है ? यूनानी शब्द *proskuneo* (''की ओर चूमना'') जिसका अनुवाद ''आराधना'' हुआ है, में परमेश्वर के प्रति दिखाई गई भक्ति और श्रद्धा का विचार है। मसीही लोग हर समय ऐसा नहीं करते। एक और यूनानी शब्द *letreuo* (''सेवा'') में आराधना सम्मिलित हो सकती है पर यह आराधना तक सीमित नहीं है। मसीही लोगों को हर बात में परमेश्वर की सेवा की तलाश करनी चाहिए।

Proskuneo के निम्न इस्तेमालों से पता चलता है कि कोई आराधना के क्षणों में प्रवेश कर सकता है, पर हर बार आराधना नहीं करता:

मत्ती 2:2, 11- पंडित लोग (ज्योतिषी) यीशु की आराधना करने गये थे।
मत्ती 2:8-हेरोदेस ने कहा कि वह यीशु की आराधना करना चाहता है।
मत्ती 14:33-जब यीशु ने झील को शांत किया तो नाव में बैठे लोगों ने उसकी आराधना की।
मत्ती 18:26-यीशु ने एक दृष्टांत बताया जिसमें सेवक ने अपने स्वामी को श्रद्धांजलि दी।
मत्ती 28:9, 17-यीशु के जी उठने के बाद उसके चेलों ने उसकी आराधना की (देखें लूका 24:52)।
यूहन्ना 9:38-एक अंधे ने जिसे यीशु ने चंगाई दी थी, उसकी आराधना की।
यूहन्ना 12:20-लोग परमेश्वर की आराधना करने पर्व में गये।
प्रेरितों 8:27-इथोपिया का मंत्री आराधना करने यरूशलेम गया था।
प्रेरितों 10:25-कुरनेलियुस पतरस की आराधना करने के लिए उसके कदमों में गिर गया।
प्रेरितों 24:11-पौलुस ने कहा कि वह आराधना करने यरूशलेम में गया।
1 कुरिन्थियों 14:25-सच्चाई को मान लेने वाले लोग आराधना करेंगे।

ये आयतें निर्णायक प्रमाण देती हैं कि की जाने वाली हर बात आराधना नहीं है, क्योंकि आराधना का समय स्वष्ट बताया गया है। प्रकाशितवाक्य 5:14 और 7:11 इसी सच्चाई का संकेत देते हैं कि परमेश्वर की आराधना जारी रहने वाली नहीं बल्कि ठहराए हुए समय पर आरम्भ और समाप्त होती है।

यह प्रमाण कि हम हर समय आराधना नहीं कर रहे होते अन्य उदाहरणों में देखा जाता है। इस्राएली लोग तम्बू के प्रवेश पर बादल के खम्बे को देखकर आराधना करते थे (निर्गमन 33:10)। खेत से पहला फल लाने पर उन्हें बैठ कर परमेश्वर की आराधना करना आवश्यक था (व्यवस्थाविवरण 26:10)। एलकाना प्रभु की आराधना करने के लिए अपने नगर से साल में एक

बार शीलो में जाता था (1 शमुएल 1:1, 3)। पौलुस ने लिखा कि आत्मिक दान पाए हुए पवित्र लोगों को आम समझ में आने वाली भाषा में भविष्यवाणी करनी चाहिए ताकि मण्डली में आए अविश्वासी लोग गिरकर परमेश्वर की आराधना करें (1 कुरिन्थियों 14:24, 25)।

मनुष्य के लिए परमेश्वर की आराधना (*proskuneo*) और सेवा (*latreuo*) भी करनी आवश्यक (मत्ती 4:10; लूका 4:8)। *Latreuo* में आराधना सहित परमेश्वर की सेवा का हर पहलू शामिल है। इस्राएलियों को दिन-रात परमेश्वर की ''सेवा'' करनी थी (प्रेरितों 26:7)। हन्ना उपवास और प्रार्थनाओं के साथ दिन-रात ''सेवा'' कर रहा था (लूका 2:37)। परन्तु हर सेवा आराधना नहीं है। मसीहियत की परछाईं के रूप में यहूदी आराधना नमूने के रूप में ''सेवा'' (*latreuo*) करती थी। यीशु ने कहा कि मसीही लोगों को मारने वालों को ऐसा लगेगा जैसे वे परमेश्वर की ही ''सेवा कर रहे'' (latreia) हों (यूहन्ना 16:2)। पौलुस का लक्ष्य परमेश्वर की ''सेवा'' करना था (रोमियों 1:9; 2 तीमुथियुस 1:3)। भूखे को खाना खिलाना एक प्रकार से परमेश्वर की सेवा (latreuo) है, पर ऐसा कार्य परमेश्वर की प्रशंसा (*proskuneo*) नहीं है।

लूका 17:7-10 में यीशु ने एक दास के बारे में एक पाठ बताया जिसने अपने स्वामी की आज्ञाओं को माना। यह दास खेत में काम करके और उसके मेज पर उसकी सेवा करके अपने स्वामी की आराधना नहीं कर रहा था। यदि सेवा आराधना होती तो जब भी हम दूसरों की सेवा करते हैं तो उनकी आराधना करना होता। आराधना में हृदय से परमेश्वर के साथ ऐसे बात करना है, जो उसे स्वीकार्य है (इब्रानियों 13:15)।

यदि हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हम जो कुछ भी करते हैं वह आराधना होती है तो आराधना में हम जो भी सांसारिक और घरेलू काम करते हैं वह शामिल होता है। यदि हमने कृतज्ञता और धन्यवाद दिखाने के उद्देश्य से किया हो तो इनमें से कई काम आदमी के लिए अपमानजनक होंगे। खाना बनाना, व्यवसायिक गतिविधियां, पति और पत्नी का सम्बन्ध और साफ सफाई का ध्यान रखना परमेश्वर को पसन्द हो सकता है। पर ये काम परमेश्वर के प्रति *proskuneo* के काम नहीं हैं। *Latreuo* की तरह वे अपनी जगह सही हैं पर निजी प्रार्थनाओं या पवित्र लोगों की आराधना सभा में इस्तेमाल किए जाने पर गलत होंगे। आराधना और परमेश्वर की सेवा में अन्तर करना आवश्यक है; आराधना (*proskuneo*) आत्मा और सच्चाई से होनी आवश्यक है। दैनिक जीवन में हम जो कुछ भी करते हैं चाहे वह परमेश्वर की सेवा में ही क्यों न हो उसकी हर बात को परमेश्वर की आराधना में शामिल नहीं किया जा सकता।